Airo International Research Journal

Volume XII, ISSN: 2320-3714
July, 2017
Impact Factor 0.75 to 3.19

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

UGC Approval Number 63012

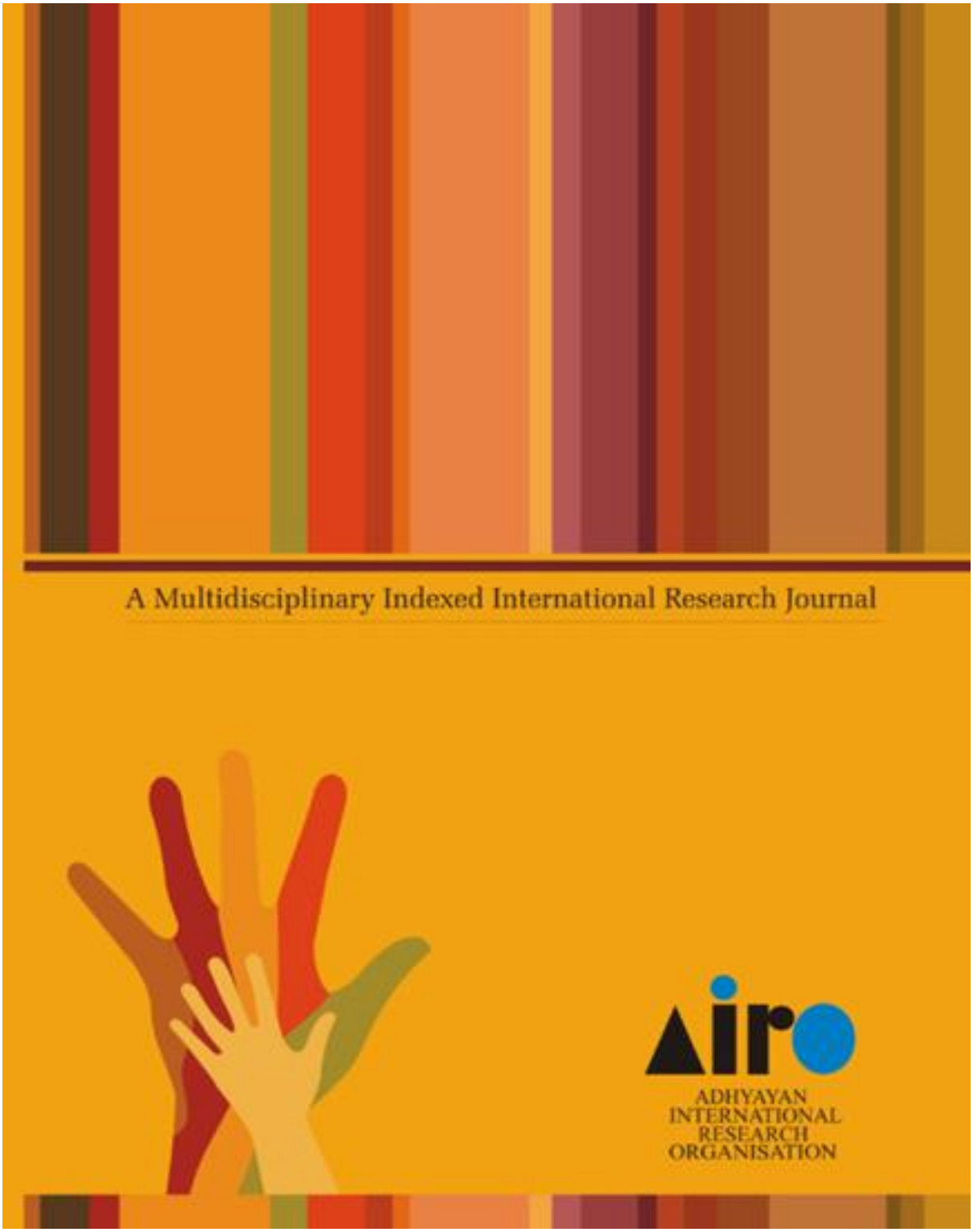

Airo International Research Journal

Volume XII, ISSN: 2320-3714
July, 2017
Impact Factor 0.75 to 3.19

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

UGC Approval Number 63012

संत रविदास का सामाजिक एवं मानववाद अध्ययन

Veena Kumari
Research Scholar, *Dravidian University Kuppam*

Declaration of Author: I hereby declare that the content of this research paper has been truly made by me including the title of the research paper/research article, and no serial sequence of any sentence has been copied through internet or any other source except references or some unavoidable essential or technical terms. In case of finding any patent or copy right content of any source or other author in my paper/article, I shall always be responsible for further clarification or any legal issues. For sole right content of different author or different source, which was unintentionally or intentionally used in this research paper shall immediately be removed from this journal and I shall be accountable for any further legal issues, and there will be no responsibility of Journal in any matter. If anyone has some issue related to the content of this research paper's copied or plagiarism content he/she may contact on my above mentioned email ID.

सारांश: मानववाद अंग्रेजी भाषा के "ह्यूमैनिज्म" का हिन्दी रूपान्तर है।1 ह्यूमैनिज्म शब्द की उत्पति लैटिन भाषा ह्यूम्नस' से हुई है। इस प्रकार 'ह्यूमन' शब्द में 'इज्म' प्रत्यय लगने से "ह्यूमैनिज्म" अर्थात मानववाद शब्द की उत्पति हुई। 'मानवता और समाजवाद' पुस्तक की प्रस्तावना में मानववाद के विषय में एस. पोपोव ने लिखा है, मानववाद एक सैद्वान्तिक विचार पद्वति के रूप में पश्चिमी यूरोप में नव–जागरण काल में सामन्तवाद के विरूद्ध जन–संघर्श के समय प्रकट हुआ। मानववाद,जिसे लैटिन "ह्यूमैनिज्म" के आधार पर यूरोप में "ह्यूमैनिज्म" कहा गया इसी युग में पन्द्रहवी और सोलहवीं सदी में सर्वमान्य हुआ। परन्तु इसके आदर्श मानव को प्रकृति की सबसे अधिक मूल्यवान देन स्वीकार करना, मानवीय परिश्रम का सम्मान, मानवीय शक्ति एवं बौद्विकता में विश्वास, मनुष्य के स्वतन्त्र का विकास का अधिकार आदि उतने ही प्राचीन है जितनी की सभ्यता। मानववाद के मुख्य स्त्रोत दास युग और बाद में सांमती युग के समाज में मनुष्यों की चेतना के रूप मं देखे जा सकते हैं।2

हिन्दी साहित्य कोश में मानववाद के बारे में कहा गया है "मानववादी ये मानते ळेकि पाश्विक एवं दैवीय गुणों के मध्य कुछ ऐसा भी है, जो पूर्ण रूप से मानवीय है औरउसे नैतिकता, कला, सौन्दर्यबोध तथा अन्य आचार–विचार का माप मानना चाहिए।"मानव की पवित्रता और सज्जन मान भाव के द्वारा मनुष्य का मूल्यांकन होता है।इससे मानव गुण न केवल अपना अपितु समस्त मानव जाति का मार्गदर्शन करता है औरमनुष्य जीवन लक्ष्य की पूर्ति से सहायक होते हैं। वेद–शास्त्रों में सेवा, दान, परहित कामना,सत्य आचरण, संतोष, अपरिग्रह आदि को आंतरिक शुचिता के लिए महत्वपूर्ण बताया है।इसलिए मनुष्य को काम, ओध, लोभ, मोह, ईर्ष्या वैर से रहित होकर मानवीय भावना सेप्रेरित होकर हमें मानवता की सेवा करनी चाहिए।

प्रस्तावना

आज कोई भी राष्ट्र मानव चिंतन की अवहेलना नहीं कर सकता। मानव चिंतनविशेष जाति–धर्म, समाज, राष्ट्र तक सीमित न रहकर विश्वव्यापी हो गया है। आज पूराविश्व एक विश्वग्राम बन गया है। इसलिए समस्त विश्व में मानव हितों की रक्षा के लिएआवश्यक है कि व्यवस्थित चिंतन से मानवतावाद की उदघोषणा हो। संत साहित्य के सभीमर्मज्ञ इस बात से सहमत है कि भारतीय आत्मा का विकास संत साहित्य में हुआ। संतसाहित्य ने न केवल तत्कालीन परिस्थितियों में व्यापक रूढ़िवादी परम्पराओं का विरोधकिया अपितु समाज में आने वाली पीढ़ियों को मानवतावाद का पाठ पढ़ा कर स्वस्थ

चिंतनप्रदान कर मानव–मानव में भावात्मक एकता का प्रचार किया। हिन्दी साहित्य के इतिहासमें धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र में नवीन चेतना का स्वर फैलाने का श्रेय संत रविदास कोजाता है। जिसने मानव मन को संकीर्णता से मुक्त करंच–नीच, जाति, धर्म भेद, रूढिवादीपरम्परा के खिलाफ आवाज उठाकर मानव चिंतन पर बल दिया। मानवतावादी वहदृष्टिकोण है। जिसमें मानव की अनुभूतियों, समाज के प्रति संवेदना, भावों, व्यक्तिगतआदर्श नीतियों, परोपकार की भावना, करूणा, मैत्री भाव आदि लक्षणों से मुक्त हो। जोऊँच–नीच, जाति–पाति के भेदभाव को भुलाकर, अहं, काम, ओध, लोभ, मोह, वैर, परिग्रह,ईर्ष्या, निन्दा आदि विकारों को त्याग कर सभी जीव को सर्वज्ञ ईश्वर का अंश मानकरमानवकल्याण की भावना निहित हो।

भक्तिकाल में समाज मे व्याप्त विसंगतियों के दौर में मानवीय कल्याण की भावनासंत परम्परा का प्रमुख लक्ष्य था। संत रविदास ने समाज में सुधार लाने की चेष्टा संतकबीर की तरह खंडनात्मक पद्धति से नहीं की अपितु विनम्रता से मानव मन की दुष्प्रवृतियोंका परिष्कार करते है, जिसके कारण समाज में कुरीतियाँ उत्पन्न हुई है। वह स्वयं कोचमार कह कर वास्तविकता से मुँह नहीं मोड़ते।

ऐसी मेरी जाति विश्यात चमार,

हिरदै राम गा`बिन्द गुन मारं।

सुरसरी जल लीया कृत बारूणी रे

जैसे स ंत जन करत नही ं पान।

अनेक अधम जीव ना ं गुणि उधर`,

पतित पावन भये परसिसारं।

भणत रैदास ररंकार गुण गावता

संत साधु भये सहजि पार।

मानव जन्म से ऊँच–नीच नहीं, कर्म से ऊँचा या नीचा होता है। हृदय में गुणोंत्रिगुण के नाशक भगवान है। भगवान का नाम लेकर अनेक अधम जीवों का उद्धार हुआ।सार तत्व को प्राप्त कर पतित पावन हो गए।

“हम अपूजि पूजि भये हरि तैं, नाम अनुपम गाया रे।

हम अपराधी नीच पर जम्मै, कुटुम्ब लाजकरै हंसीरे।

अर्थात नीच घर में जन्म लेने के कारण नीच समझते थे, परन्तु प्रभु भक्ति से अपूज्यहोते हुए भी सम्मानित हुए। गुरू रविदास के सामाजिक सम्मान का एकमात्र कारण यही थाकि उनकी वाणी इतनी विनम्र और सरल थी। किसी भी धर्म, जाति, वर्ण का मनुष्य अपनेजीवन को सफल बना सकता था। गुरू रविदास ने इसी बात पर बल दिया कि ब्राण,क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी वर्ग के लिये भक्ति के दरवाजे खुले हैं। गुरू रविदास जीकहते हैं कि साधु किसी भी वर्ण का हो, गरीब हो, ईश्वर वहां निवास करता है। ब्राणवैश्य, शूद्र, डोम, चंडाल, मलेच्छ मन वही है। ये सब भगवान के भजन से मुक्त होते हैंऔर अपने और दूसरों के कुल को भी तारते है:

“जिह कुल साधु बैसनौ होई

बरन अबरन रंकू नही ं ईसरू विमल बासु जानी ऐ जागी सोई

ब्रहमन बैस सूद्र अरूख्यत्री डोम चंडार मलेच्छ मन सोई।

होई पुनीत भगवंत भजन से आपु तारि तारै कुल दोई।।”

उपसंहार

मानव–मानव में संवेदना, आत्मीयता, करूणा की भावना प्रस्फुटित हो और समस्तविश्व को एक आध्यात्मिक बन्धुत्व में बंधा हुआ देखे। संत रविदास के विचार आज भीकिसी राष्ट्र या समाज में प्रचलित अर्न्तविरोधी एवं समस्याओं का समाधान निकाल करमानव की खोई हुई गरिमा वापिस ला सकती है। आज का समाज जाति–पाति, भ्रष्टाचार,घृणा, द्वेष, आतंकवाद, नक्सलवाद, मौलिक प्रतिभा का हनन, प्रकृति समस्याओं से जूझ करनैतिक मूल्यों को खोता जा रहा है। भारत जैसे प्रजातांत्रिक राष्ट्र में जनता की सेवा करनेवाले चन्द स्वार्थी राजनितिज्ञ जो सता में आने के बाद राष्ट्र सेवा के नाम पर विदेशी बैंकोंमें पैसा जमा कर सवा अरब भारतीयों की भावनाओं के साथ बलात्कार करते है। मनुष्य कोइस प्रकार की परिस्थितियों से निजात दिलाने के लिए मानवतावाद का पुनर्व्यवस्थाअपरिहार्य है। संत रविदास का काव्य मानव को मानवतावाद के मार्ग में ले जाने मेंसहायक हो सकता है। कोई भी राष्ट्र अगर मानवतावाद के पथ पर चलने की कोशिशकरेगा। उससे न केवल इस देश का नहीं सम्पूर्ण विश्व का कल्याण सम्भव है। इसलियआज सम्पूर्ण मानव जाति को मानव कल्याण एवं अस्तित्व प्रदान करने के लिये संतरविदास के काव्य का अध्ययन कर उसे व्यावहारिकता में लाना अनिवार्य है। ताकि जिसभारत ने अध्यात्म, ध्यान, दर्शन, योग के क्षेत्र में पूरे विश्व का नेतृत्व किया, वह भारत फिरसे विश्व का सिरमौर बन जाये।

संदर्भ :

[1]. फादर कामिल बुल्के, अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश, पृ. 304

[2]. एस पोपोव, मानवतावाद और समाजवाद, पृ. 5

[3]. हिन्दी साहित्य कोश, पृ. 369–70

[4]. रैदास समग्र – सम्पादक डॉ. युग`श्वर, हिन्दी प्रचारक पब्लिक`शन वाराणसी, पृ. 85

[5]. वही, पृ. 86

[6]. वेणी प्रसाद शर्मा, संत रविदास की भक्ति साधना, पृ. 15

[7]. रैदास समग्र, सम्पादक डॉ. युगेश्वर, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन वाराणसी, पृ.125

[8]. डॉ. नरेश, पंजाबी दुनिया, गुरू रविदास विशेषांक, जून – जुलाई, 1977] पृ. 4

[9]. डॉ. चन्द्रदेव राय : कबीर ओर रैदास – एक तुलनात्मक अध्ययन, पृ. 8

[10]. रैदास समग्र, संपादक डॉ. युगेश्वर, हिन्दी प्रचारक पब्लिकेशन, वाराणसी, पृ. 115

[11]. वही, पृष्ठ 108

[12]. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, भारतीय साहित्य की सा`स्कृतिक रेखाएं, पृ. 34

[13]. आचार्य पृथ्वी सिंह–रविदास दर्शन, पृ. 161

[14]. रैदास समग्र सम्पादक डा. युग`श्वर, वाराणसी, पृ. 71–72

[15]. डॉ. हुकुमचन्द राजपाल : गुरू रविदास वाणी और महत्व : सम्पादक डॉ. मीरा गौतम,

[16]. पृ. 128

[17]. प्रो. प्रीतम सिंह : मुख बन्ध–संत रविदास स्त्रोत पुस्तक पंजाबी सं. जसवीर सिंह, पृ. 7–8-